International Research Journal of Education and Technology

Peer Reviewed Journal
ISSN 2581-7795

Historical importance of Emperor Ashoka's inscriptions located in Uttar Pradesh

Sagar Gautam, Dr. Sanjay Kumar, Dr. Champalal Mandrele

1. Sagar Gautam, Ph.D., Research Student, Department- Samrat Ashok Subharti School of Buddhist Studies, Swami Vivekanand Subharti University, Meerut-250002

2. Dr. Sanjay Kumar, Assistant Professor, Samrat Ashok Subharti School of Buddhist Studies, Swami Vivekanand Subharti University, Meerut-250002

3. Dr. Champalal Mandrele, Assistant Professor and Head of Department, Samrat Ashok Subharti School of Buddhist Studies, Swami Vivekanand Subharti University, Meerut-250002

उत्तर प्रदेश में स्थित सम्राट अशोक के शिलालेखों का ऐतिहासिक महत्व

सागर गौतम, डॉ. संजय कुमार

1. **सागर गौतम, पी. एच. डी., शोध छात्र, विभाग- सम्राट अशोक सुभारती स्कूल ऑफ बुद्धिस्ट स्टडीस, स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ-250002**
2. **डॉ. संजय कुमार, सहायक आचार्य, सम्राट अशोक सुभारती स्कूल ऑफ बुद्धिस्ट स्टडीस, स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ-250002**
3. **डॉ. चम्पालाल मंदरेले, सहायक आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, सम्राट अशोक सुभारती स्कूल ऑफ बुद्धिस्ट स्टडीस, स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ-250002**

शोध सार

सम्राट अशोक, मौर्य साम्राज्य के महान सम्राट, भारतीय इतिहास में एक अद्वितीय और प्रेरणादायक व्यक्तित्व के रूप में माने जाते हैं। उनका शासनकाल लगभग 268 से 232 ईसा पूर्व तक था और उनके द्वारा अपनाए गए सुधार और नीति ने भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव डाला। सम्राट अशोक का शासन अहिंसा, धार्मिक सहिष्णुता, और सामाजिक कल्याण की नीतियों के लिए प्रसिद्ध था। वे बौद्ध धर्म के अनुयायी थे और

© 2025, IRJET Volume: 07 Issue: 02 | ww.irjweb.com Feb 2025

उनके शासनकाल में बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार हुआ। इस धर्म के सिद्धांतों को फैलाने के लिए सम्राट अशोक ने शिलालेखों का उपयोग किया, जो उनके प्रशासनिक आदेशों और धार्मिक दृष्टिकोणों को व्यक्त करने का मुख्य साधन बने।

सम्राट अशोक के शिलालेख न केवल उनके शासन की नीतियों का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं, बल्कि ये शिलालेख उनके द्वारा किए गए समाज सुधारों, धार्मिक आदर्शों, और मानवता के प्रति उनके दृष्टिकोण को भी दर्शाते हैं। इन शिलालेखों में सम्राट ने अहिंसा, धर्म का पालन, सामाजिक न्याय और नागरिक अधिकारों के सम्मान की बात की थी। इन शिलालेखों के माध्यम से सम्राट ने अपने राज्यवासियों को सिखाया कि कैसे वे व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन में अहिंसा और सहिष्णुता का पालन करें, और समाज में व्याप्त अन्याय और असमानता को समाप्त करने के लिए कदम उठाएं।

उत्तर प्रदेश में स्थित सम्राट अशोक के शिलालेख विशेष महत्व रखते हैं। सम्राट अशोक के शासन की नीतियों और उनके धार्मिक दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हैं। इन शिलालेखों में सम्राट ने अपने राज्यवासियों को धार्मिक शांति, न्याय, और आपसी भाईचारे का संदेश दिया। साथ ही, उन्होंने अपने प्रशासन में सुधार, न्यायपूर्ण दंड व्यवस्था और जनता की भलाई के लिए कई कदम उठाए थे।

सम्राट अशोक के शिलालेखों का इतिहास में गहरा स्थान है, क्योंकि वे न केवल उनके शासन की महत्वपूर्ण घटनाओं और नीतियों का रिकॉर्ड प्रस्तुत करते हैं, बल्कि बौद्ध धर्म के प्रसार में भी एक अहम भूमिका निभाते हैं। इन शिलालेखों के माध्यम से हम सम्राट अशोक के समय के सामाजिक और धार्मिक जीवन की गहरी समझ प्राप्त कर सकते हैं। सम्राट अशोक के द्वारा किए गए कार्यों और उनके शिलालेखों का अध्ययन भारतीय संस्कृति और इतिहास के लिए अमूल्य धरोहर है।

© 2025, IRJET Volume: 07 Issue: 02 | ww.irjweb.com Feb 2025

इस शोध पत्र में उत्तर प्रदेश में स्थित सम्राट अशोक के शिलालेखों का अध्ययन करके उनके ऐतिहासिक महत्व, उनके द्वारा किए गए सुधारों, और उनके धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण को समझने का प्रयास किया गया है। सम्राट अशोक का शासनकाल भारतीय समाज में एक मील का पत्थर साबित हुआ, और उनके शिलालेख आज भी हमें उनके विचारों और नीतियों को समझने का एक माध्यम प्रदान करते हैं।

परिचय

सम्राट अशोक, मौर्य वंश के महान सम्राट, भारतीय उपमहाद्वीप के अधिकांश हिस्से पर 268 ईसा पूर्व से 232 ईसा पूर्व तक शासन करते थे। उनके शासनकाल में, उन्होंने शिलालेखों का उपयोग किया, जो आज भी उनके शासन के महत्वपूर्ण पहलुओं को दर्शाते हैं। इन शिलालेखों में अशोक के विचार, उनके द्वारा लागू की गई नीतियां, और उनके धर्म के प्रति दृष्टिकोण का वर्णन किया गया है। अशोक ने धम्म लिपि का प्रयोग करते हुए अपने शिलालेखों में धर्म, अहिंसा, और समाज के सुधार की बातें साझा कीं। ये शिलालेख न केवल भारतीय उपमहाद्वीप, बल्कि बांग्लादेश, नेपाल, पाकिस्तान और अफगानिस्तान जैसे क्षेत्रों में भी पाए गए हैं, और बौद्ध धर्म के प्राचीनतम प्रमाण प्रदान करते हैं।

अशोक ने अपने शिलालेखों में धम्म के बारे में स्पष्ट रूप से लिखा, जो उनकी नीति और दृष्टिकोण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। इस धम्म की अवधारणा में अहिंसा, सहिष्णुता, और सामाजिक कल्याण के सिद्धांतों का पालन किया गया। शिलालेखों के माध्यम से अशोक ने अपने साम्राज्य में धार्मिक और सामाजिक सुधारों की आवश्यकता का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया, जो आज भी हमे एक संगठित और सभ्य समाज की दिशा में प्रगति का मार्ग दिखाते हैं।

रोमिला थापर के अनुसार, अशोक ने धम्म की परिभाषा में अहिंसा, विभिन्न धार्मिक और सामाजिक समूहों के प्रति सहिष्णुता, और परस्पर सम्मान जैसे विचारों को रखा। इन शिलालेखों में न केवल बौद्ध धर्म

© 2025, IRJET Volume: 07 Issue: 02 | ww.irjweb.com Feb 2025

का उल्लेख किया गया है, बल्कि एक सामान्य नैतिकता और जीवन के आदर्शों पर बल दिया गया है, जिनका पालन हर धर्म और समुदाय कर सकता था। दिलचस्प यह है कि ग्रीक संस्करणों में "धम्म" का अनुवाद "यूसेबिया" (धर्मपरायणता) किया गया, और शिलालेखों में कहीं भी बुद्ध की शिक्षाओं का सीधे उल्लेख नहीं किया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि अशोक का धम्म बौद्ध धर्म से कहीं अधिक व्यापक और गैर-सांप्रदायिक था।

शिलालेखों से यह भी स्पष्ट होता है कि अशोक ने अपने साम्राज्य में धम्म के प्रचार के लिए अपार प्रयास किए थे। यद्यपि बौद्ध धर्म का उल्लेख हुआ, फिर भी शिलालेखों में अधिक ध्यान सामाजिक और नैतिक शिक्षाओं पर दिया गया है, न कि विशिष्ट धार्मिक प्रथाओं या बौद्ध दर्शन पर। ये शिलालेख सार्वजनिक स्थानों पर रखे गए थे ताकि लोग उन्हें पढ़ सकें और अपने जीवन में इन सिद्धांतों को लागू कर सकें।

अशोक ने अपने बारे में "देवताओं का प्रिय" (देवानाम्पिया) का उल्लेख किया है, जो उनके पवित्र और नैतिक शासन की पहचान थी। यह उपाधि 1915 में सी. बीडन द्वारा मास्की (वर्तमान कर्नाटका) में खोजे गए शिलालेख से प्रमाणित हुई थी। इस शिलालेख में "देवानाम्पिया पियादसि अशोकराज" का उल्लेख भी किया गया था, जो उनकी महानता और धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण को दर्शाता है।

इन शिलालेखों में विभिन्न विषयों को एकत्रित किया गया है, जैसे कि अशोक का बौद्ध धर्म में धर्मांतरण, धम्म के प्रसार के प्रयास, उनके नैतिक और धार्मिक उपदेश, और उनके पशु एवं सामाजिक कल्याण के कार्यक्रम। ये शिलालेख हमें न केवल अशोक की शासन नीतियों को समझने का मौका देते हैं, बल्कि यह भी दिखाते हैं कि उन्होंने अपने समाज और प्रशासन को किस प्रकार से परिभाषित किया था।

© 2025, IRJET Volume: 07 Issue: 02 | ww.irjweb.com Feb 2025

अशोक के शिलालेखों को उनके आकार (लघु या प्रमुख) और उनके माध्यम (शिला या स्तंभ) के आधार पर चार श्रेणियों में विभाजित किया गया है। कालक्रम में, छोटे शिलालेख बड़े शिलालेखों से पहले आते हैं, और शिला शिलालेख आमतौर पर स्तंभ शिलालेखों से पहले बनाए गए थे।

1. **लघु शिलालेख**: ये अशोक के शासनकाल के आरंभ में उत्कीर्ण शिलालेख हैं, जो प्राकृत, ग्रीक और अरामी भाषाओं में लिखे गए थे। इनमें बुद्ध, संघ, बौद्ध धर्म और बौद्ध धर्मग्रंथों का उल्लेख किया गया है।
2. **लघु स्तंभ शिलालेख**: इन शिलालेखों में प्रमुख शिलालेख, रानी का शिलालेख, रुम्मिनदेई शिलालेख, और निगली सागर शिलालेख शामिल हैं, जो प्राकृत में हैं।
3. **प्रमुख शिलालेख**: यह 14 शिलालेखों का समूह है (जिन्हें 1 से 14 तक माना जाता है) और ओडिशा में पाए गए दो अलग-अलग शिलालेखों में प्राकृत और ग्रीक का प्रयोग हुआ है।
4. **प्रमुख स्तंभ शिलालेख**: ये अशोक के शासनकाल के अंतिम वर्षों में उत्कीर्ण 7 शिलालेख हैं, जो प्राकृत में लिखे गए हैं।

लघु शिलालेख और लघु स्तंभ शिलालेख की सामग्री ज्यादातर धार्मिक होती है, जिसमें बुद्ध, पिछले बुद्धों, संघ और बौद्ध धर्म का उल्लेख होता है। इसके विपरीत, प्रमुख शिलालेख और प्रमुख स्तंभ शिलालेख आमतौर पर नैतिक और राजनीतिक होते हैं, और इनमें धर्म, व्यवस्थित शासन, उचित आचरण और अहिंसा जैसे विषयों पर बल दिया गया है। ये शिलालेख राज्य प्रशासन और तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में विदेशी देशों के साथ सकारात्मक संबंधों की चर्चा करते हैं।

अशोक के लघु शिलालेख, जो 269-233 ईसा पूर्व के बीच लिखे गए थे, अशोक के शिलालेखों का प्रारंभिक हिस्सा हैं और ये प्रमुख शिलालेखों से पहले आते हैं। पहले ज्ञात शिलालेख, जिसे कंधार द्विभाषी

© 2025, IRJET Volume: 07 Issue: 02 | ww.irjweb.com Feb 2025

शिलालेख कहा जाता है, ग्रीक और अरामी में है और यह अशोक के शासनकाल के दसवें वर्ष (260 ईसा पूर्व) का है। अशोक ने अपने शासनकाल के 11वें वर्ष में, बौद्ध धर्म की ओर अपनी प्रवृत्तियों को दर्शाते हुए भारतीय भाषाओं में पहला शिलालेख लिखा। इन शिलालेखों में तकनीकी गुणवत्ता सामान्य रूप से कम थी, और इनकी उत्कीर्णन शैली प्रमुख स्तंभ शिलालेखों से अधिक सरल थी।

अशोक के लघु शिलालेखों में "देवानामप्रिय" शीर्षक के साथ उनका नाम, जैसे कि मास्की और गुजरात में मिले शिलालेखों में, उनके शासन के ऐतिहासिक प्रमाण के रूप में सामने आता है। इसके अतिरिक्त, बैराट मंदिर के पास एक लघु शिलालेख भी मिला है, जिसमें बौद्ध धर्मग्रंथों की सूची दी गई है, जिनका पादरियों को नियमित रूप से अध्ययन करना चाहिए। अशोक के अरामी भाषा में कुछ अन्य शिलालेख भी हैं, जिनमें समान विषयवस्तु है, और इन शिलालेखों को भी कभी-कभी "लघु शिलालेख" के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। इन लघु शिलालेखों का वितरण व्यापक था और ये कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और हिंदू कुश तक फैले हुए थे।

सारनाथ, जो उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिले में स्थित है, भारतीय इतिहास और बौद्ध धर्म का एक महत्वपूर्ण केंद्र है। यह वही पवित्र स्थल है जहाँ गौतम बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के बाद अपने पहले पांच शिष्यों को "धर्मचक्र प्रवर्तन" का उपदेश दिया था, जो बौद्ध धर्म की नींव रखता है। इस ऐतिहासिक घटना को सम्राट अशोक ने विशेष महत्व दिया और सारनाथ को धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में विकसित किया।

सारनाथ में स्थित अशोक स्तंभ भारतीय इतिहास, कला और धर्म का अद्वितीय प्रतीक है। यह स्तंभ लगभग 13 मीटर ऊंचा है और एक ही बलुआ पत्थर से निर्मित है। इसकी बनावट और नक्काशी मौर्यकालीन स्थापत्य कला की उत्कृष्टता का प्रतीक हैं। स्तंभ के शीर्ष पर चार सिंहों की मूर्ति स्थित है, जो पीठ से पीठ

© 2025, IRJET Volume: 07 Issue: 02 | ww.irjweb.com Feb 2025

मिलाकर खड़े हैं। यह शीर्ष अब भारतीय गणराज्य का राष्ट्रीय प्रतीक है और इसका गहरा सांस्कृतिक और प्रतीकात्मक महत्व है:

- **शक्ति**: चार सिंह सामर्थ्य और शक्ति का प्रतीक हैं, जो एक मजबूत और संगठित शासन का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- **साहस**: सिंह साहस और निर्भीकता का प्रतीक हैं, जो जीवन के विभिन्न पहलुओं में आत्मविश्वास और दृढ़ता की प्रेरणा देते हैं।
- **धर्मचक्र**: सिंहों के नीचे खुदा हुआ धर्मचक्र बौद्ध धर्म के "अष्टांगिक मार्ग" का प्रतीक है, जो शांति, नैतिकता और धर्म के निरंतर प्रवाह को दर्शाता है।

अशोक स्तंभ का प्रभाव इतना गहरा था कि इसे 26 जनवरी 1950 को भारतीय गणराज्य का राष्ट्रीय प्रतीक घोषित किया गया। यह अब भारतीय मुद्रा, पासपोर्ट और सरकारी प्रतीकों पर अंकित होता है, जो भारत की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत को दर्शाता है।

धम्म संदेश और शिलालेख

अशोक स्तंभ पर खुदे शिलालेखों में सम्राट अशोक के "धम्म" के संदेश का प्रचार किया गया है, जिसमें अहिंसा, सत्य, करुणा, और नैतिकता के सिद्धांतों पर जोर दिया गया। इन शिलालेखों में सरल और व्यापक भाषा का उपयोग किया गया, जिससे लोगों तक उनके संदेश आसानी से पहुंच सके।

मुख्य संदेशों में शामिल हैं:

1. **अहिंसा**: शिलालेखों में सभी जीवों के प्रति दया और अहिंसा का आग्रह किया गया है।

© 2025, IRJET Volume: 07 Issue: 02 | ww.irjweb.com Feb 2025

2. **नैतिकता और सदाचार**: सत्य, परोपकार और न्याय के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी गई है।
3. **धार्मिक सहिष्णुता**: सभी धर्मों और समुदायों के प्रति समानता और सहिष्णुता का संदेश दिया गया है।

सारनाथ, वाराणसी के पास स्थित, बौद्ध धर्म के प्रमुख तीर्थस्थलों में से एक है। यह वही स्थल है जहां गौतम बुद्ध ने अपने पहले शिष्यों को धर्मचक्र प्रवर्तन उपदेश दिया, जिससे बौद्ध धर्म की नींव पड़ी और सारनाथ को धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टि से एक महत्वपूर्ण केंद्र बना। सम्राट अशोक, जिन्होंने बौद्ध धर्म के सबसे महान संरक्षकों में से एक के रूप में ख्याति प्राप्त की, ने सारनाथ को विशेष महत्व दिया और यहां कई निर्माण कार्य कराए। उनके शासनकाल में, सारनाथ न केवल बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार का केंद्र बना, बल्कि उनकी लोकहितकारी और धर्मनिष्ठ नीतियों का प्रतिबिंब भी प्रस्तुत किया।

प्रयागराज (पूर्व में इलाहाबाद), जो भारतीय सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से एक महत्वपूर्ण स्थल है, में स्थित अशोक स्तंभ भारतीय इतिहास का एक अद्वितीय स्मारक है। यह स्तंभ प्रयागराज के किले के भीतर स्थित है, जिसे मुग़ल सम्राट अकबर ने बनवाया था। इस स्तंभ का महत्व न केवल इसकी स्थापत्य कला और सौंदर्य में है, बल्कि इसके शिलालेखों में समाहित ऐतिहासिक संदेशों में भी है। यह स्तंभ मौर्यकाल से लेकर गुप्तकाल और मुग़लकाल तक भारतीय संस्कृति, प्रशासनिक नीतियों, और धार्मिक सहिष्णुता की झलक प्रस्तुत करता है।

अशोक स्तंभ पर अंकित शिलालेख सम्राट अशोक के धम्म (धर्म) के प्रचार और उनके शासन की नीतियों का गहरा प्रमाण हैं। इन शिलालेखों के माध्यम से अशोक ने नैतिकता, करुणा और लोकहितकारी नीतियों को जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास किया। अशोक के शिलालेख उनके धम्म के सिद्धांतों को उजागर करते हैं, जो धार्मिक और नैतिक मूल्यों पर आधारित थे।

© 2025, IRJET Volume: 07 Issue: 02 | ww.irjweb.com Feb 2025

धम्म का संदेश

अशोक ने अपने शिलालेखों में अहिंसा, सत्य, और करुणा के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने समाज में हिंसा के उन्मूलन और सभी जीवों के प्रति दया भावना के प्रसार पर बल दिया। शासकों और प्रजा दोनों के लिए सत्य और ईमानदारी का पालन आवश्यक बताया। उन्होंने नैतिकता और सहिष्णुता को समाज में स्थिरता और विकास के लिए अनिवार्य बताया। अशोक ने जनता के कल्याण के लिए कई लोकहितकारी नीतियां लागू कीं, जिनका उल्लेख स्तंभ के शिलालेखों में मिलता है, जैसे यात्रियों के लिए सड़क निर्माण, छायादार वृक्षों की रोपाई, कुंओं, जलाशयों और सरायों की स्थापना, और मनुष्यों और पशुओं के लिए चिकित्सालयों की स्थापना।

कैमूर और मिज़ापुर क्षेत्र: अशोक के शिलालेख का महत्व

उत्तर प्रदेश के कैमूर और मिज़ापुर क्षेत्र मौर्यकालीन भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण स्थल हैं। यहां पर पाए गए अशोक के शिलालेख न केवल मौर्यकालीन शासन की झलक प्रदान करते हैं, बल्कि यह भी दर्शाते हैं कि अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रसार और प्रचार के लिए विशेष प्रयास किए थे। इन शिलालेखों से यह ज्ञात होता है कि सम्राट अशोक ने अपने शासन में समाज के कल्याण और धार्मिक सहिष्णुता के लिए कई कदम उठाए थे।

कैमूर के शिलालेखों में प्रमुख संदेश

1. **धम्म का प्रचार**: कैमूर के शिलालेखों में यह महत्वपूर्ण पहलू है कि अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए विशेष प्रयास किए थे। इन शिलालेखों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि अशोक ने बौद्ध धर्म

© 2025, IRJET Volume: 07 Issue: 02 | ww.irjweb.com Feb 2025

के सिद्धांतों को फैलाने के लिए बौद्ध भिक्षुओं को प्रेरित किया। इन शिलालेखों में नैतिकता, अहिंसा, और सत्य के सिद्धांतों का प्रचार किया गया।

2. **लोक कल्याणकारी योजनाएं**: कैमूर के शिलालेखों में अशोक के लोक कल्याणकारी कार्यों का उल्लेख भी मिलता है, जैसे जलस्रोतों, चिकित्सालयों और पशु-पालन के प्रबंधों का निर्माण। इन शिलालेखों से यह भी पता चलता है कि अशोक ने अपने साम्राज्य में नागरिकों की सुविधा और स्वास्थ्य की दिशा में कई ठोस कदम उठाए थे, जैसे जलस्रोतों और जलाशयों का निर्माण।

अशोक के शिलालेखों में यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि उन्होंने बौद्ध धर्म के प्रचार और समाज में धर्म, नैतिकता, और लोक कल्याण के सिद्धांतों को फैलाने के लिए कई स्थायी और प्रभावी उपाय अपनाए।

संदर्भ सूची

1. श्रीराम गोयल, नद मौर्य साम्राज्य का इतिहास, कुसुमांजलि प्रकाशन, मेरठ, 1968
2. राजवली पाण्डेय, अशोक के अभिलेख, वाराणसी, ज्ञान मंडल, 1965
3. श्रीराम गोयल, प्राचीन भारतीय अभिलेख संग्रह, वनराजस्थान हिन्दी अकादमी
4. सैनी, रणजीत सिंह, अभिलेखमंजूषा, न्यू भारतीय बुक कॉर्पोरेशन, दिल्ली, 2000
5. वी.डी. महाजन, प्राचीन भारत का इतिहास, 1966
6. डॉ. प्रसाद, ईश्वरी एवं शर्मा, शैलेन्द्र, प्राचीन भारतीय संस्कृति, कला, राजनीति, धर्म तथा दर्शन, मीनू पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद, 1980
7. राणा, एस. एस., भारतीय अभिलेख, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली, 1978
8. डॉ. मेश्राम, मनीष, बौद्ध दर्शन का उद्भव एवं विकास, प्रथम संस्करण, कल्पना प्रकाशन, दिल्ली, 2014

© 2025, IRJET Volume: 07 Issue: 02 | ww.irjweb.com Feb 2025

9. डॉ. दत्त, नलिनाक्ष, उत्तर प्रदेश में बौद्ध धर्म का विकास, प्रथम संस्करण, प्रकाशन ब्यूरो, उत्तर प्रदेश सरकार, लखनऊ, 1956

10. बी.एम. बरुआ, अशोक एण्ड हिज इंस्क्रिप, 1955

11. डॉ. चौधरी, के. के., प्राचीन भारत का इतिहास, प्रथम संस्करण, रावत प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016

12. राजवली पाण्डेय, अशोक के अभिलेख, वाराणसी, ज्ञान मंडल, 1965